Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal
ISSN 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 9 | March - 2016

कुछ विचार सूत्रों के दायरे में 'गोदान'

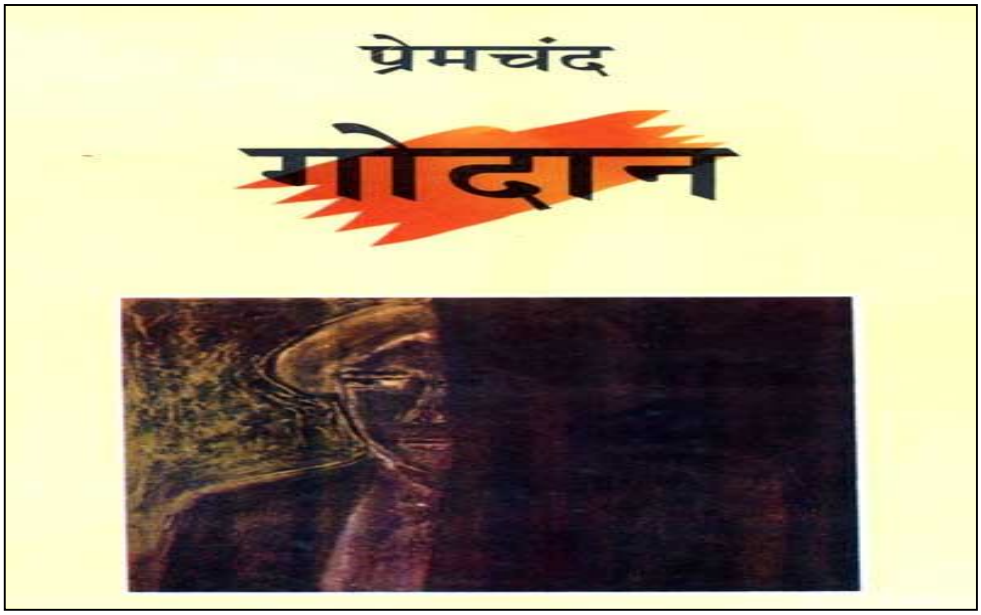

डॉ. दुर्गावती सिंह
असि.प्रो.हिंदी,आर्य महिला डिग्री कालेज,शाहजहाँपुर.

प्रस्तावना :

'गोदान' प्रेमचंद की प्रसिद्ध और अनुपम कथाकृति है। बहुत कम पाठकों को यह मालूम है किइस उपपन्यास का अधिकृत भाग बंबई जैसे शोर–शराबे वाले शहर में बैठ कर लिखा गया था, पर कथाभूमि स्पष्ट तौर दिखाई नहीं पड़ता। इसकी कथा को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि मुंशी जी पात्रों के सामने बैठकर लिख रहे हैं। उनकी इस कथा के भीतर प्रवेश करने से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि परिस्थितिवश वे भले ही बंबई में पड़े थे, पर उनका देहाती मन 'सेमरी' और 'बेलारी' जैसे अवध के गाँवों में ही रम रहा था। समूची कथा में वे एक ग्राम्य–जीवन के कुशल पारखी के रूप में ही सामने आते हैं। नगरीय जीवन उनके लिए अभिशप्त लगता है। यह ावह बिंदु है जहाँ वे स्वयं को लाके–जीवन से आबद्ध करते हैं और नगरीय नारकीय जीवन से बवने की कोशिश करते हैं। 'गोदान' के उत्तरार्द्ध भाग में जहाँ भी उन्होंने नगरीय जीवन की झाँकी को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, वह उबाऊ और नीरस है। वे भारत सपूत थे जहाँ कि अधिकतर जनता गाँवों में अब भी बसती है। वे भातर के गाँवों की जनता के प्रतिनिधि कथाकार है, इस मासयने में दो राय नहीं है।

'गोदान' की रचना सन् 1930–36 के बीच हुई। यह रचना इस कालावधि का यथार्थ दस्तावेज है। इस बीच समूचा जमीदारवर्ग यह समझने लगा था कि अब रियासते नहीं बच सकेंगी। इसके समानान्तर पूँजीवादी महाजनों में भी यह समझ आ गयी थी कि अब न सस्ते मजदूर मिलेंगे ओर न तो ब्याज की ऊँची दरें ही मिल सकेंगी। सन् 1929–36 ई0 की विश्व–व्यापार की मंदी ने अंग्रेज पूँजीपतियों उद्योगपतियों को तबाह कर दिया था। इसी स्थिति की यथार्थता को समझकर रायसाहब ने दोनों ओर अपना तालमेल बैठना शुरू कर दिया था।

प्रेमचंद का एक उपन्यास 'प्रेमाश्रम' है जिसमें किसान, जमींदार संघर्ष और प्रेमाश्रम नामक संस्था में समझौता के माध्यम से सबका हृदय परिवर्तन कराकर एक आदर्श गाँव का निर्माण किया गया है। पर ऐसा आदर्श गाँव उनके जमाने में कहीं नहीं दिखलायी पड़ा। आदर्श के प्रति उनका मोहभंग होना स्वाभाविक ही था। इसी मोहभंगता को ध्यान में रखकर ही कुछ विद्वानों ने 'गोदान' का संबंध है यह आगामी युग की प्रेसखेमा का अवश्व, किंतु साथ–ही–साथ पहले युगों का मुकुट भी है। सच तो यह है कि 'गोदान' में यही दिखलाया गया है कि पहले के युगों में ही आगामी युग अंतर्निहित है। वह आ रहा है,उसे कोई रोक नहीं सकता। सहस्र वज्रों तथा एटम बमों की तरह उसकी शक्ति है। भ्रिग्रमाण तथा हरासशील समाजपद्धतियाँ और विचारधाएं उसकी जय–यात्राओं को राके नहीं सकती। यह युग्र आकर ही रहेगा। इसी में 'गोदान' की श्रेष्ठता है, इसी में उसका अमरत्व हैं। इसी कारण और कलाकृतियाँ के मुकाबले में उसकी श्रेष्ठता है।

सच तो यह है कि 'गोदान' को लिखते समय वे विकासवादी समाजवादी हो गये थे। डॉ0इंद्रनाथ मदान को लिखे एक पत्र में उन्होंने साफ तौर पर लिखा था–''हमारा उद्देश्य जनमत तैयार करना है, इसलिए मैं सामाजिक विकास में विश्वास रखता हूँ। अच्छे तरीकों के असफल होने पर ही क्रांति होती है। मेरा आदर्श है, प्रत्येक को समान अवसर का प्राप्त होना। इस सोपान तक बिना विकास के कैसे पहुँचा जा सकता है। इकसा निर्णय लोगों के आचरण पर निर्भर है। अब तक कि हम व्यक्तिगत रूप से इस उन्नत नहीं हैं, तब तक कोई भी सामाजिक व्यवस्था आगे नहीं बढ़ सकती।''[1] स्पष्ट है कि प्रेमचंद को यह मालूम हो गया था कि लिखावटी सुधार ओर आदर्श से कृति में हीनता आती है। इसीलिए उन्होंने 'गोदान' तक आते–आते आदर्शवाद को पूरी तरह नकार दिया था। उनकी पूर्व कथाकृतियों में सुधार और आदर्श के जो प्रयत्न किये गये हैं उससे समाज का वास्तविक रूप सामने नहीं आ पाता है। उनकी आदर्शवादी विचारधारा पर आपेक्ष करते हुए डॉ0 रामविलास शर्मा ने लिखा है,''प्रेमचंद का आदर्शवादउनकी पूर्व कृतियों के एक पहलू को विगड़ाता है। वह है समस्या से एक सुदर परिणाम निकालने वाला, परंतु उसके अंतर में बसा हुआ यथार्थवादी समस्या की जटिलता चित्रित करने में बहुत कम मेल मुलाहिजा करता है। जहाँ उनका आदर्शवाद दब गया है और उन्होंने बरबस परिणाम ढूँढने का प्रयास नहीं किया या समस्या को सामने रखकर संतोष कर लिया, वहाँ वे अद्वितीय हैं।''[2] ये सच है कि कथाा में सत्य का उद्घाटन होना ही चाहिए। यह सव ही वह यथार्थ है जिसके माध्यम से मानव समाज और मानव जीवन की स्वस्थ–अस्वस्थ दोनों पक्षों को वास्ताविकताओं को कथाकृतियों में उजागर किया जाता है। प्रेमचंद ने अपने स्फुट निबंधों में यह स्पष्ट किया है कि यथार्थवाद एक विचार है शैली नहीं। इस विचारधारा को अपनाकर ही कथाकार श्रेष्ठ उपन्यासों की सर्जना कर सकता है। 'गोदान' इसी मायने में एक सर्वश्रेष्ठ कथाकृति है।

'गोदान' में नये समाज की रचना की और संकेत किया गया है। प्रेमचंद की यही चिंतनभूमि अपने समकालीन कथाकारों से उन्हें अलग कर देती है। यदि इस कृति के भीतर प्रवेश कर देंखे तो इसका नायक होरी स्वयं एक चतुर्भुज के अंदर अपने को पुश्त–दर–पुश्त के लिए बँधा पाता है। उसे कभी यह विश्वास ही नहीं हो पाता कि वह पूँजीवादी, सामंती, महाजनी और धार्मिक रूढ़ियों एवं परंपराओं की चारदीवारी में से किसी में भी थोड़ा–सा सुराख करके निकल सकेगा, क्योंकि होरी की अपनी सारी मान्यताओं से मोहभंग हो चुका है। होरी की तरह ही प्रेमचंद को भी सुधार, आदर्श और विविध वादों से मोहभंग हो चुका था। आदर्शवाद और विकासवाद जब उनको संतोष न दे सके, तब वे यथार्थवाद का पल्ला पकड़कर आगे बढ़े गोबर में जो विद्रोह की भावना परिलक्षित होती हैं वह समाज के परिवर्तन की पुकार है। उन्होंने अपनी अंतिम कृति 'मंगलसूत्र' में क्रांति करने का जो आह्वान किया है, वह उनकी चिंतनभूमि का बीजमंत्र है,''दरिंदों के बीच में उनसे लड़ने के लिए हथियार बाँधना पड़ेगा। उनके पंजों का शिकार बनना देवतापन नहीं, जड़ता है।''[3] वे जनता की इसी

1
2
3

जड़ता को नष्ट करना चाहते हैं। यह पुनर्जागरण से ही संभव है। इस तरह प्रेमचंद अपने समय के पुनर्जागरण के पहले कथाकार हैं।

प्रेमचंद आर्थिक असमाानता को बुरी चीज मानते हैं। आर्थिक असमानता के कारण ही समाज में दो वर्ग पनप उठे। उच्चवर्ग और निम्नवर्ग। पूँजीवादी, सामंती, महाजनी और धार्मिक ठेकदार ही उच्चवर्ग के संचालक हैं। निम्नवर्ग ही सर्वहारा वर्ग हैं जिसके प्रतिनिधि किसान और मजदूर हैं। एक शोषक है तो दूसरा शोषित। 'गोदान' का शोषण पहले से भिन्न है। शोषित वर्ग श्रम तो दोगुना करता है पर इसके एवज में जो कुछ उसे पारिश्रमिक भुगतान के रूप में प्राप्त होता है। वह श्रम का दशांश भी नहीं होता है। इसीलिए यह वर्ग ऋण की समस्या में उलझकर अपना जीव गवां बैठता है। डॉ0 रामविलास शर्मा के 8गोदान' की मूल समस्या के रूप में ऋण समस्या को सामने रखा है। होरी मरकर भी इस समस्या से मुक्त न हो सका। वह अपने अकेले पुत्र गोबर को विरासत के रूप में ऋण की पोटल ही दे ताता है। इस तरह इस वर्ग में ऋण की परंपरा पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती रहती है। अंग्रेज एजेन्ट जमींदार अमरपाल सिंह, मिल मालिक खन्ना साहब, लाला पटेश्वरीलाल, दातादीन, झिंगुरी सिंह, दुलारो सहुआईन और कारकुन नोखराम आदि पात्र शोषक हैं। पं0ओमकारनाथ ऐसे बगुलाभगत हैं जो खादी पहनकर भी फ्रांस की शराब पीते हैं। पूँजीपति खन्ना और जमींदारअमरपाल सिंह के ठाठ ही अनोखे हैं। इसके नाखून बढ़े हुए हैं ये सभी पात्र भीतर से खोखले है।, पर बाहर से शेर बने हुए है। शेर बनकर ही वे दलितों का शोषण करते हैं इस तरह 'गोदान' सर्वहारावर्ग की शोषण कथा को नये आयाम में ढालकर प्रस्तुत करता है।

प्रेमचंद उपयोगितावादी कलाकार है। उनकी उपयोगितावाद का मूलाधार है भारतीय जनता का अधिक से अधिक हित । उनका यही हित–चिंतन उन्हें मानवतावादी कथाकार बना देता है। उन्होंने मानव की मूल समस्या (अर्थ समस्या) पर मानवीय दृष्टि से विचार किया है। उनका मानना है कि शोषण की पूरी प्रक्रि अर्थतंत्र की देन है जिसकी पूँजीपतियों, सामंतों, महाजनों एवं धर्म के ठेकेदारों–पुरोहितों ने अस्त्र के रूप में प्रयोग किया है इस शोषण की प्रक्रिया को नष्ट करने का उपाय है अर्थ का समाज वितरण । यह तभी संभव है जब उत्पादन करने वाले श्रमिकों किसानों को उनके श्रम का उचित मूल्य मिले। 'गोदान' में भारतीय ग्रामीण किसानों तथा शहर में जूझते हुए मजदूरों की यथार्थ जीवन स्थिति को जिन संदर्भों में चित्रित किया गया है, वह बेजोड़ है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में–''जो ग्रथकार किसी जाति को सच्चे रूप में उपस्थित करता है, उसके गुण दोषों को ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त कर सकता है– वह संसार की सबसे बड़ी सेवा करता है।'' चाहें रायसाहब, पटवारी, पटेश्वरीलाल हों या झिंगुरी सिंह हों, प्रेमचंद जातीय गुणों–अवगुणों को समान रूप से चित्रित करते हैं। होरी हीरा, भोला, धनिया, मालती, मेहता आदि पात्रों के चरित्र को भी वे जातीय संदर्भों में उकेरने से नहीं चूकते। इसी मायने में वे एक जातीय कथाकार की भूमिका भी निभाते हैं। जिस तरह मातादीन अपनी पुरोहिती को जमींदारी और बैंकघर समझते हैं, उसी प्रकार लाला पटेश्वरी और झिंगुरी सिंह भी अपनी महाजनी को किसी रियासत से कम नहीं समझते। 'गोदान' के अन्य पात्र भी इसी तरह की सोच रखते है। मालती और मातादीन की छोड़कर उनके सभी पात्र 'टाईप' है। श्री मन्मथनाथ गुप्त ने एक स्थान पर लिखा है,''प्रेमचंद के चरित्र अकसर टाईप न बनकर व्यक्ति ही गढ़े हैं इसलिए उनमें प्राणों की कमी रहती है।''[4] गुप्त का यह कथन उनके पूर्व के कथा–कृतियों पर भले ही लागू हो, पर 'गोदान' के पात्रों पर खरी नहीं उतरती।

नारी के बारे में प्रेमचंद की दृष्टि प्रगतिशील है। वे नारी को स्वतंत्र, संयमित और विकसित रूप में देखने के हिमायती हैं। उन्होंने 'गोदान' के मालती के तितली वाले रूप को कहीं नहीं पसंद किया है। उनको तो खन्ना की पत्नी गोविंदी, जो एक कुशल ग्रहिणी हे का चरित्र पसंद है। वे नारी के हरजाईपन और पुरुष के भौंरेपन को भी समानरूप से घृणा की दृष्टि से देखते हैं लाला पटेश्वरी और झिंगुरी सिंह के लड़कों का गाँव की लड़कियों की ताक–झांक करना और घर–गाँव का नाता छोड़कर उनके साथ प्रेम–व्यवहार करना वे बुरा समझते हैं। उनको सिलिया का वह चरित्र पसंद है, जो मातादीन से प्रेम करती है और लाख दुर्दशा होने पर भी उन्हें नहीं छोड़ती; न कि नोहरी का, जो बूढ़े पति भोला की ओट में कुकर्म कराती है, पति को सरेआम चप्पलों से पीटती है और उनकी उपेक्षित दृष्टि से देखती हुई गुलछर्रे उड़ाती है। यही नहीं, उनको प्रोफेसर मेहता के प्रेम की परिभाषा भी पसंद नहीं है, जो प्रेम को बंधन मानते हैं, इसी के बाद में उनके चरित्र में परिवर्तन कराते हैं और मालती के साथ विवाह–प्रस्ताव भी रखवाते हैं पर तक मालती बदल जाती है, अपने विवाह को वह सात्रमाज सेवा में बाधक बताती हुई इनकार कर जाती ह। इस तरह मेहता का सारा दर्शन फेल हो जाता है

4

और वे एक उपास्य से उपासक की स्थिति में आ जाते हैं प्रेम को वे भोग विलास की वस्तु नहीं मानते हैं। वे इसे एक स्थायी बंधन के रूप में स्वसीकार करते हैं । गोबर ने पहले प्रेम की भोग–विलास की वस्तु समझकर झुनिया को अपनाया था, पर बाद में इसी प्रेम ने उसके जीवन को कर्मपथ की ओर अग्रसर होने का जो आलोक दिया, उससे उसका जीवन स्थिर हो गया। विवाह कापे वे एक सामाजिक समझौता मानते हैं, जिसे तोड़ने का अधिकार न तो पुरुष को है न स्त्री को। विवाह, उनकी दृष्टि में, ऐकांतिक उच्छृखलता नहीं, सामाजिक बंधन है। उन्होंने प्रेम को जाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ण, वर्ग से अछूता सिद्ध किया है। अनमेल विवाह, बहुविवाह, तलाक जैसी कुप्रथाओं से वे घृणा करते है। इस मायने में उनकी दृष्टि प्रगतिशील है। वे नारी–उत्थान के सजग प्रहरी है। उन्हें नये सिरे से जागृति करना ही इस उपन्यास का मुख्य सरोकार है।

'गोदान' में जिस औद्योबिक सभ्यता को चित्रित किया गया है, वह यूरोप की औद्योगिक सभ्यता का ही प्रतिरूप है। इसका यह प्रतिरूप सामंती–महाजनी, पूँजीवादी सभ्यता को नये सिरे विकसित करता है। धनही इसका प्रमुख अस्त्र है। मान–सम्मान, प्रतिष्ठा और गौरव सभी धन की तुला पर तुलते हैं; न्याय, नैतिकता, धर्म और आध्यात्म सभी इसी पर बिकते हैं धन हीं वह शक्तिशाली परदा है जो सभी कुकर्मों को ढक देता है। इस सभ्यता का मुख्य कर्म है, पैसा कमाना। और उसका प्रतिमान है धन को संग्रहीत करना। छल छद्म इसका मूल मंत्र है और शोषण इसकी प्रवृत्ति। मँगरू साहू, पं0मातादीन, दुलारी सहुआइन, झिंगुरी सिंह, पटेश्वरीलाला, रायसाहब, खन्ना आदि ऐसे ही महाजन है जिसकी दृष्टि में बड़ा एक महान आदमी वही होता है जिसके पास पैसा है। ऐसी स्थिति में गरीबों का मान करना अपराध है और धनिया का दंभ करना श्रृंगार। वे इस पूँजीवादी व्यवस्था और सभ्यता को जड़ से नष्ट कर देने की घोषणा करते हैं। वे 'गोदान' में रायसाहब के मुख से ही कहलाते हैं,''किसी को दूसरे के रम पर मोटे होने का अधिकर नहीं हैं उपजीवी होना लज्जा की बात है। कर्म करना प्राणिमात्र का धर्म है। समाज की ऐसी व्यवस्था जिसमें कुछ लोग मौज कर और अधिक लोग पीसे और खाएं, कभी सुखद नहीं हो सकती। पूँजी और शिक्षा, जिसे मैं एक पूँजी का रूप मानता हूँ, इनका किला जितनी जल्द टूट जाये, उतना ही अच्छा है। प्रश्न है क इसको कैसे तोड़ा जाय? प्रेमचंद इस महाजी सभ्यता को तोड़ने का रास्ता ढूँढते है और बतलाते हैं कि स्वदेशी आंदोलन ही वह रास्ता है जिससे यूरोपीय सभ्यता को नष्ट किया जा सकता है। इसके स्थान पर वे कृषि संस्कृति और सभ्यता को नये सिरे से विकसित करने का आह्वान करते हैं। वस्तुतः वे कृषि संस्कृति के व्याख्याता हैं। 'गोदान' उसकी परिणति है।

एक प्रश्न जिस पर लगातार चिंतन–मनन होता रहा है, वह है क्या 'गोदान' एक प्रतिनिधि रचना या महाकाव्यात्मक उपन्यास है ? आज भी यह प्रश्न विवादास्पद बना हुआ है। श्री मन्मथनाथ गुप्त जहाँ इसको प्रतिनिधि रचना मानते हैं वहाँ आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी इसका विरोध करते हैं। बाजपेयी के मन में रूसी उपन्यासकार टॉल्सटाय की कथाकृति 'युद्ध और शांति' (वार एण्ड पीस) घर गया था। उनका मानना है कि 'गोदान महाकाव्यात्मक कृति भी नहीं है, क्योंकि महाकाव्य की परंपरा औपन्यासिक परंपरा से नितांत भिन्न हैं इस एपिक नाविल अर्थात् राष्ट्रीय जीवन की प्रतिनिधि रचना नहीं कह सकते, क्योंकि राष्ट्रीय जीवन के किसी विशेष युग का संपूर्ण उदघाटन किसी एक उपन्यास में करना कदाचित संभव नहीं है। इसका कथानक भी सुसंबद्ध नहीं है। यह ग्रामीण जीवन के दैन्य और सामाजिक वैषम्य को प्रदर्शित करता है। करुण रस की उसमें प्राधान्य है। इस करुण रस ग्राम्य–चित्रण को राष्ट्रीय जीवन का प्रतिनिधि चित्र नहीं कहा जा सकता।''[5] इनमें तत्कालीन परिस्थितियों और राष्ट्रीय आंदोलनों आदि को भी चित्रित नहीं किया गया है। इसमें प्रेमचंद ने भारतीय समाज की रीढ़ किसान की सारी समस्याओं और उनकी करुण–कथाओं को समाज के सामने उजागर करने का उपक्रम किया है। इस तरह इसे हम कृषक–जीवन का गाथात्मक उपन्यास कह सकते हैं।

'गोदान' एक भारतीय किसान जिसे प्रेमचंद 'होरी' कहते हैं कि करुण जीवनगाथा, मर्मभेदी कहानी है। होरी कथ्य का केंद्र बिंदु है, अतः ग्राम्य–जीवन की व्यथा, पीड़ा और वेदना का उद्घाटन उनका काम्य है। अतः निष्कर्ष सहज हो गया कि होरी की कथा आधिकारिक है, ग्राम्य जीवन का चित्रण मुख्य है, रायसाहब प्रासंगिक विकलप हैं, नगर की कथा प्रासंगिक है, गौण हैं फिर ग्राम और नगर मिलते नहीं, बिंदु पर दोनों का मिलन नहीं होता। दोनों कथाएं एक दूसरे से संबद्ध नहीं है। आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी ने ठीक ही कहा है,''गोदान के नागरिक और ग्रामीण पात्र एक बड़े मकान के दो खण्डों मे रहने वाले दो परिवारों के समान हैं, जिनका एक दूसरे के जीवन क्रम में बहुत कम संपर्क है। वे कभी–कभी आते–जाते मिल जाते हैं और कभी–कभी किसी बात पर झगड़ा भी कर लेते हैं, परंतु न तो उनके मिलने में और न झगड़े में ही कोई ऐसा संबंध स्थापित होता है,

5

जिसे स्थायी कहा जा सके।'' सच तो यह कि प्रेमचंद का मन ग्राम्य जीवन में रमा है, उतना नगरीय जीवन में नहीं। नगरीय जीवन की कथा में जो तारतम्यता और नीरसता दिखलायी पड़ती है उसका बहुत कुछ कारण यही है। कुछ प्रसंग अस्वाभाविक हैं कि उनका कथा से कोई जुड़ाव नहीं है। यथा, धनुष यज्ञ प्रकरण, खान प्रसंग। इस तरह, वस्तु–विन्यास की दृष्टि से भी 'गोदान' एक सशक्त रचना नहीं है।

प्रेमचंद किसी सिद्धांत या व्यक्ति के पिछलग्गू नहीं थे। उनको अपने द्वारा निर्मित राह सबसे अच्छी लगती थी। उन्होंने एक बार स्वयं कहा था–''मैं किसी पार्टी में नहीं हूँ।.....मैं उस आने वाली पार्टी का मेम्बर हूँ जो अदमअलनास (जनसाधरण) की सियासी (राजनीतिक) तामील को अपना दस्तुरूल अमल (विधान) बनायेगी।''[6] वे जनसाधारण के हिमायती थे। वे देश की सत्ता की बागडोर किसान–मजदूर के हाथ में देना चाहते थे। संभवतः उनके कम्युनिस्ट बनने की प्रक्रिया के पीछे यही प्रभाव था। वे एक प्रगतिशील कथाकार थे। शोषितों और पीड़ितों की पीड़ा को वे अपनी पीड़ा समझकर दूर करना चाहते थे। वे 'गोदान' कथाकृति के माध्यम से समाज के भीतर से शोषण हटाना चाहते थे। वे एक मानवतावादी कथाकार थे, इसलिए वे मानवता के विकास के पक्षधर भी थे। उनकी यह कृति मानव पीड़ा के इतिहास का एक जीता जागता दस्तावेज है।

संदर्भ :

1. इंद्रनाथ मदान : प्रेमचंदः चिंतन और कला, पृ0 11
2. रामविलास शर्मा : प्रेमचंद, पृ0 79
3. प्रेमचंद : मंगलसूत्र ,पृ0 37
4. हजारी प्रसाद द्विवेदी : पुनर्नवा, पृ0 57
5. श्री मन्मथनाथ गुप्त : प्रेमचंद, पृ0 91
6. वही, पृ0 317
7. नंददुलारेबाजपेयी : हिंदी साहित्य
8. वही, पृ0 186
9. प्रेमचंद : रंगभूमि, पृ0 331

6